विद्याभवन ,बालिका विद्यापीठ ,लक्खीसराय

रूपम कुमारी ,वर्ग-सप्तम् ,विषय-हिन्दी .

दिनांक- २/७)२०.

अध्ययन-सामग्री .

सुप्रभात बच्चों, कल की कक्षा में आपने पढ़ा कि – शशि पर हो रहे अत्याचार को देखकर उमा बेहोश हो जाती है। अब आगे .

स्नेह

अमूल्य मुस्कुरा कर रह गए ।

थोड़ी देर बाद हाथ में हाथ लेकर बोले ,

"उमा तुम्हें क्या हो गया है ?"

उमा ने उन्हें देखा और पूछा, "शशि कहां है ?

उसे बुला दो अब ना बचूँगी ।“

अमूल्य उसके ऊपर झुक गए और प्रेम भरे स्वर में बोले,“ ऐसा मत बोलो उमा ।“

उमा ने उसी तरह कहा,“ आपको दुख होता है, पर मैं क्या करूं ? मेरे कारण उस बालक को बहुत कष्ट उठाने पड़ते हैं ।उसे एक बार मेरे पास ला दो ।“.

उधर ही आती निरुपमा ने उन वाक्यों को सुना । वह बोली ,” जिसके कारण तुम उस दशा में पहुँच गई ,उसको देखने की साथ अब भी बाकी है ? तुम्हें उसकी छाया से रचना चाहिए ।“.

“तुमने यह क्या कहा जीजी ?” उमा ने हृदय के आवेग को रोकते हुए कहा ।

“शशि को उसके मामा के यहाँ भेज देती हूँ ।इस अभागे बालक के कारण मैं अपनी चाँद -सी बहू को नहीं खो सकती ।“.
कहते- कहते निरुपमा की आँखें भर आईं ।.

उमा कोई उत्तर न दे सकी । भावावेश से उसकी जिह्वा रुँध गई ।उसने कातर दृष्टि से अपने पति की ओर देखा मानो उससे कहा ,”ऐसे तो मैं जल्दी ही चली जाऊँगी ।“.

और जब निरुपमा चली गई तो अमूल्य बोले ,” मैं कहता हूँ उमा ! हम दूसरे मकान में चलेंगे ।“.
“तब क्या होगा?” उमा ने अचरज से पूछा ।
“तुम भी भी के अत्याचार न देख सकेगी ।“

"तुम कैसी बातें करते हो ?" शशि को जब और जहाँ दुख होगा , मेरी आत्मा तड़प न उठेगी ? ".

उसी समय अमूल्य ने खिड़की के परदे पर किसी की परछाई देखा ।उन्हें समझते देर न लगी । उन्होंने खिड़की खोल दी ।वह शशि था ।अमूल्य को देखकर वह शीघ्रता से लौट चला ।

अमूल्य बोले , " शशि इधर आओ ।".

शेष कल.....

दी गई सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें ,अपनी कॉपी में लिखें तथा समझने का प्रयास करें ।

धन्यवाद